VISION IAS

19 DEC 2020

www.visionias.in

SUBJECT:	ESSAY	Test Code:	1458
Name of Candidate	SANDEEP KUMAR		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	473817
Center	MN	Date	1/7/1220

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

क्या हम वि-वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहे हैं।

" विश्व में वैश्वीकरण एक विचार है जो क्रमिक रूप से गतिशील है। वर्तमान वि-वैश्वीकरण के आंदोलन भी सर्वाधिक वैश्वीकृत है।"

कोफी अन्नान का यह कथन वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं गतिशीलता को बताता है। वर्तमान समय में इंटरनेट, सूचना प्रौद्योगिकी एवं सोशल मीडिया ने वैश्वीकरण की रफ्तार को तीव्र किया है। वैश्वीकरण से आशय सामाजिक एवं सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक कारकों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का वैश्विक स्तर पर आदान-प्रदान होता है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास में उत्पादन के कारक एवं सामाजिक गतिशीलता महत्वपूर्ण होती है।

वैश्वीकरण का प्रथम चरण औपनिवेशवाद से प्रभावित था। इसमें कच्चे माल का निर्यात उपनिवेशों द्वारा किया जाता था। उपनिवेश तैयार समान के लिए बाजार का कार्य करते थे। 1945 के बाद वैश्वीकरण पूंजीवादी देशों के विचारों से प्रभावित था। 1990 के शीत युद्धोत्तर विश्व व्यवस्था में विकासशील देशों की भी सक्रिय भूमिका है।

क्या हम वि-वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्रथम ~~दृष्टय~~ दृष्टिकोण से 'हाँ' ही दिखता है। जब हम अमेरिका व चीन के व्यापार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

युद्ध को देखते हैं। अमेरिका द्वारा वीजा नियमों को सख्त किया जाना। अमेरिका रोजगार में स्थानीय लोगों को वरीयता दे रहा है। अमेरिका ने भारत का GSP सुविधा एवं विकासशील देश का दर्जा खत्म कर दिया है। अमेरिका अपने नागरिकों को वैक्सीन प्रदान करने हेतु वैक्सीन राष्ट्रवाद को भी बढ़ावा दे रहा है।

ब्रिटेन भी संरक्षणवादी प्रवृत्ति को अपना रहा है। यूरोपीय संघ से अलग होना। वीजा नियमों एवं मानदंडों में वृद्धि करना। भारत के द्वारा भी आत्मनिर्भर भारत अभियान एवं क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक समझौते पर हस्ताक्षर न करने को कुछ लोग इसी संदर्भ में देख रहे हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रत्येक देश कोरोना महामारी में महत्वपूर्ण एवं आवश्यक वस्तुओं हेतु आत्मनिर्भर होना चाहता है। दवाओं की आपूर्ति, खाद्यान्न एवं सैन्य सामग्री में भी आत्मनिर्भरता पर बल दे रहे है। वर्तमान विश्व व्यवस्था के नियम एवं मुक्त समुद्री परिवहन को भी राष्ट्रों द्वारा बाधित किया जा रहा है।

उपर्युक्त संदर्भों के कारण ही कुछ वैश्विक नेता डिग्लोबलाइजेशन की ओर बढ़ने का संकेत कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है, जब हम पूरे वैश्विक दृश्य को व्यापक एवं समग्र दृष्टिकोण से देखते हैं तो वैश्वीकरण का विचार गतिशील एवं प्रासंगिक नजर आता है। हालांकि इस विचार में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कुछ परिवर्तन जरूर हुए हैं।

वर्तमान समय क्षेत्रीय अ व्यापक आर्थिक समझौता वैश्वीकरण के मजबूत होने का श्रेष्ठ उदाहरण है जहाँ सभी देश निवेश, व्यापार जैसे विभिन्न मुद्दों पर एक साथ आये हैं। उसी प्रकार अफ्रीका भी आर्थिक एकीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौतों पर भी प्रगति हुई है। भारत भी अपनी बदली हुई रणनीति के तहत यूरोपीय यूनियन एवं अमेरिका के साथ मुक्त व्यापार समझौता करने का प्रयास कर रहा है।

राजनीतिक विचार भी वैश्विक संदर्भ में गतिशील हैं। अ लोकतंत्र के मूल्यों की लहर अरब स्प्रिंग के रूप में देखी जा सकती है। वर्तमान में जलवायु

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परिवर्तन, आर्थिक चुनौतियों से निपटने हेतु वैश्विक लोकतांत्रिक संस्थाएं बेहतर काम कर रही हैं। क्षेत्रीय संगठनों का निर्माण भी वैश्वीकरण को गति दे रहा है जैसे ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन आदि।

उत्पादन के साधनों की गतिशीलता भी वैश्विक रूप से ही हो रही है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला उत्पादन के कारकों को प्रभावित कर रही है। वर्तमान समय में प्रत्येक देश प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पूंजी, तकनीकी एवं कौशल को वैश्विक मानकों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप देखता है। प्रत्येक राष्ट्र वैश्विक मांग के अनुरूप उत्पादन को बढ़ाकर निर्यात को बढ़ाना चाहता है।

वैश्वीकरण ने खान-पान, परिवार की संरचना, समाज को गतिशील बनाया

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है। दीपावली का त्यौहार ब्रिटेन एवं अमेरिका में भी मनाया जाता है। वहीं क्रिसमस एवं गुडफ्राइडे भारत के भी महत्वपूर्ण त्यौहार बन गए हैं। वर्तमान में एकल परिवारों की बढ़ती संख्या एवं महानगरीय जीवन शैली वैश्वीकरण से ही प्रभावित है। वैश्वीकरण ने बच्चों की परिवरिश को भी वैश्वीकृत किया है जो इनके खेलने की प्रवृति, पोशाक एवं अध्ययन में दिखाई देता है।

वैश्वीकरण ने कोराना महामारी जैसी चुनौती के रूप में भी प्रदान किया है। कोरोना महामारी के प्रसार को वैश्वीकृत किया है। आतंकवाद, नशे की प्रवृति एवं चरम पंथ को भी वैश्विक कारकों ने प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण एक नकारात्मक प्रभाव वृद्धों की सामाजिक स्थिति एवं बच्चों पर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भी देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने संस्कृति के एकरूपता को बढ़ावा दिया है। भाषायी विविधता, रहन-सहन, पोशाक आदि को भी चुनौती पेश की है।

अब हमें वैश्वीकरण को बढ़ावा देने हेतु वैश्विक पहलों पर डालनी होगी। विश्व व्यापार संगठन व्यापार को बढ़ाने हेतु प्रयासरत है। वैश्वीकरण को बढ़ावा देने हेतु विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र संघ की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। वैश्वीकरण ने गरीबी, कुपोषण, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं को भी बढ़ाने में योगदान दिया है।

भारत भी वैश्वीकरण में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। पड़ोसी प्रथम एवं एक्ट ईस्ट की नीति के माध्यम से सक्रिय होकर आपदा, संचार, व्यापार एवं निवेश

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में भाग ले रहा है। दक्षिणी दुनिया के देशों में आर्थिक एवं मानवीय क्षमता के निर्माण में भी सहयोग कर रहा है। अपनी सीमाओं एवं हितों की सुरक्षा हेतु नए संगठनों का निर्माण भी कर रहा है।

वहीं भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने हेतु योग, प्रवासी भारतीय एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने महत्वपूर्ण रूप से काम किया है।

वर्तमान समय में वि-वैश्वीकरण की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए समग्र एवं व्यापक प्रयास करने की आवश्यकता होगी। वैश्विक नियम आधारित व्यवस्था का निर्माण करना होगा। इसके लिए वैश्विक संस्थानों को लोकतांत्रिक बनाने एवं दक्षिणी दुनिया के देशों को भी प्रतिनिधित्व देना होगा। सुरक्षा परिषद

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में लंबित सुधारों एवं विश्व व्यापार संगठन में सुधार करने होंगे। विश्व व्यापार संगठन में वस्तु व्यापार के नियमों के साथ-साथ सेवाओं को भी शामिल करना होगा। विवाद निवारण तंत्र को भी बेहतर बनाना होगा।

निवेश का मुक्त प्रवाह नवीन ऋण दुष्चक्र के स्थान पर पूंजी एवं तकनीकी के स्थानान्तरण के रूप में ही हो। इसके लिए नवीन संगठनों का भी निर्माण किया जा सकता है। प्रत्येक देश दूसरे हितों का सम्मान करे। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रभावी बनाना होगा।

भारत को सक्रिय रूप से विकासशील देशों के हितों की रक्षा करनी चाहिए। भारत अपने हितों को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मुखर होकर रखना चाहिए। स्वायत्त एवं स्वतंत्र विदेश नीति को अपनाना चाहिए। वैश्विक मूल्य श्रृंखला में सक्रिय भागीदारी भारत की गरीबी, कुपोषण एवं जीवनस्तर को बढ़ाने में सहयोग देगी। मानवीय संसाधन जो भारत में कुशल एवं शिक्षित हो। इनका सदुपयोग ही विनिर्माण क्षेत्र में भारत को अग्रणी बनाएगा।

वैश्वीकरण राजनीतिक, सांस्कृतिक व्यापार एवं निवेश को गतिशीलता प्रदान करता है इनके प्रवाह को बढ़ाकर ही संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व व्यापार संगठन एवं वैश्विक ~~#~~ स्वास्थ्य संगठन के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भी वैश्विक प्रयास करने होंगे। नवीन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

चुनौतियाँ संश्लिष्ट है। जिनका समाधान वैश्विक स्तर पर ही हो सकता है जैसे जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद आदि।
वैश्वीकरण के विचार को बढ़ाना होगा। रविन्द्र नाथ टैगोर का वैश्विक मानववाद इस दिशा में हमें प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण हेतु प्रेरणा देता है—

"कहीं एक चिंगारी ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दिए में तेल से भीगी बाती तो है।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

21वीं सदी के भारत में जल प्रबंधन की चुनौति

"रहीमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरै मोती, मानुष, चून"

रहीमदास जी का 16वीं शताब्दी का यह संदेश वर्तमान समय में अधिक प्रासंगिक है। भारत में विश्व की 17% जनसंख्या एवं 4% जल संसाधन उपलब्ध है। प्रति व्यक्ति उपभोग हेतु प्रति वर्ष ~~1700~~ 1500 घन मीटर जल उपलब्ध है जो 2030 तक 1100 घन मीटर रह जाएगा। इन तथ्यों से पता चलता है कि 21वीं

में जल प्रबंधन भारत के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है।

क्या हम सीमित जल संसाधनों के साथ विकसित राष्ट्र बन सकते हैं? क्या बिना जल प्रबंधन के हम कृषि उद्योगों का विकास कर सकते हैं? क्या 2030 में नगरीय जनसंख्या (40%) को पेयजल उपलब्ध होगा? इन सब प्रश्नों से बढ़कर क्या मानव बिना जल के जीवित रह सकता है?

उपर्युक्त प्रश्नों के जवाब हमें डराते हैं किन्तु सत्य का अहसास भी कराते हैं। भारत को विकसित राष्ट्र बनने हेतु संसाधनों का बेहतर उपयोग करना होगा। भारत में कृषि क्षेत्र में 85% जल संसाधनों का उपयोग किया जाता है। 60% भूमिगत जल सिंचाई

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हेतु उपयोग होता है। उद्योगों ~~में~~ ~~लिए~~ 7% जल का ही उपयोग होता है।

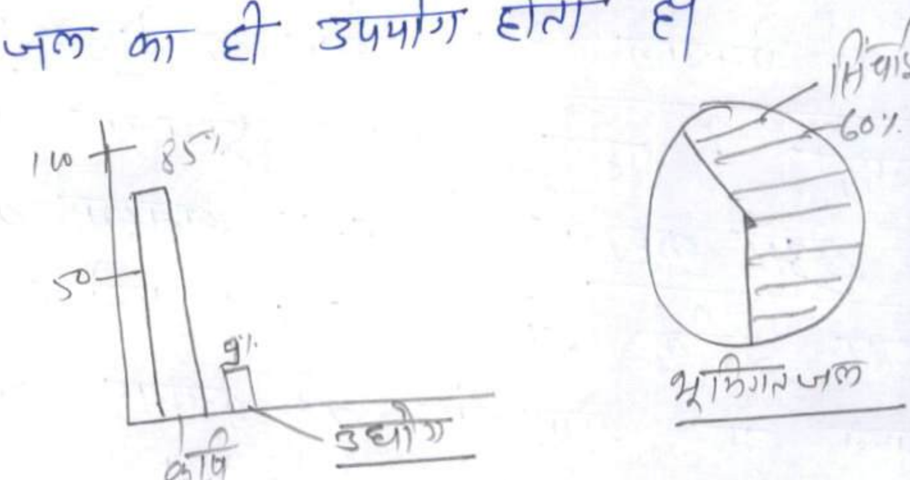

वहीं नगरीयकरण की बढ़ती प्रवृत्ति को स्वच्छ जल उपलब्ध करवाना होगा। इससे भारत सेवा क्षेत्र एवं उद्योगीकरण अधिक लाभ उठा सकता है।

महिला सशक्तीकरण भी जल प्रबंधन से जुड़ा हुआ विषय है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल हेतु 2-3 किमी. तक की पैदल चलकर संघर्ष किया जाता है। महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित करता है क्योंकि अधिकांश समय पेयजल एवं ईंधन जुटाने में खर्च हो जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाज के वंचित वर्गों एवं सुभेद्य वर्ग भी पेयजल हेतु संघर्ष करते हैं। आजादी से पहले कथाकार प्रेमचंद ठाकुर के कुआँ कहानी में इस समस्या को बेहतर तरीके से उठाते हैं। प्रत्येक समाज में संसाधनों की वंचना भी गरीबी का कारण होती है।

जल संसाधन नदी विवाद के रूप में राज्यों के मध्य संघर्ष को बढ़ावा देते हैं। जल राज्य सूची का विषय होने के कारण राज्यों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कावेरी नदी विवाद का समाधान अभी भी लंबित है। बहुउद्देश्य परियोजना के लाभों के बंटवारे हेतु भी राज्यों में संघर्ष देखने को मिलता है। हरियाणा एवं पंजाब एवं राजस्थान राज्यों में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यमुना नहर को लेकर विवाद महत्वपूर्ण है।

भारत के पड़ोसियों के साथ भी नदी विवाद द्विपक्षीय संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। भारत-बांग्लादेश के मध्य तीस्ता नदी विवाद एवं चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र पर बांध बनना भारतीय सुरक्षा एवं संप्रभुता के लिए चुनौती है। भारत-पाकिस्तान के मध्य सिंधु जल समझौता भी समय-समय पर विवादों में रहता है।

आपदा प्रबंधन हेतु भी जल प्रबंधन आवश्यक है। केन्द्रीय जल आयोग के एक अनुमान के अनुसार स्वतंत्रता के बाद प्रत्येक वर्ष भारत बाढ़ से प्रभावित रहा है। शहरी बाढ़ नवीन उभरती हुई चुनौती के रूप में सामने आई है। हाल ही में चेन्नई,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मुंबई एवं हैदराबाद में बाढ़ देश ने नगरीय आजीविका एवं अवसंरचना को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। कोरोना काल में स्वच्छता की आवश्यकता हेतु जल प्रबंधन महत्वपूर्ण हुआ है।

जल प्रबंधन का मुद्दा आंतरिक सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है। जल की मांग एवं आवश्यकता किसान आंदोलन, उग्रवाद एवं चरमपंथ को भी बढ़ावा देती है। आंतरिक अशांति के मुख्य कारण गरीबी, बेरोजगारी एवं सामाजिक वंचना है। इनका समाधान विकास एवं जल प्रबंधन के माध्यम से ही किया जा सकता है।

वैश्विक स्तर पर भी जल प्रबंधन आवश्यक है। प्रत्येक देश के सीमित जल संसाधन राष्ट्रों के मध्य संघर्ष

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

एवं तनाव में वृद्धि करते हैं। इस संदर्भ में तंजानिया का जल प्रबंधन मॉडल अनुकरणीय है। वैश्विक स्तर पर समुद्री प्रदूषण को भी रोकना होगा।

जलप्रबंधन की आवश्यकता को देखने के बाद हमें जल की गुणवत्ता एवं सीमितता को प्रभावित करने वाले कारकों पर विचार करना होगा। भारत में जल का कृषि क्षेत्र में अत्यधिक दोहन हो रहा है। यह कृषि उत्पादन को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। कृषि उत्पादों का निर्यात जल संसाधनों के निर्यात हेतु भी जिम्मेदार है जैसे चीनी के निर्यात के संदर्भ में देख सकते हैं।

नदीय जल भी प्रदूषण की समस्या से प्रभावित है। शहरी अपशिष्ट, उद्योगों से निष्कासित प्रदूषित जल एवं कृषि में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में अत्यधिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग इसका मुख्य कारण है।

भारत में जल ~~प्रद~~ प्रबंधन एवं संरक्षण की तकनीकी का बेहतर न होना भी है। जल एक संसाधन है इसका इष्टतम उपयोग ही मानव कल्याण को सुनिश्चित करेगा। इसके लिए वैश्विक संस्थानों, राष्ट्र एवं व्यक्ति के स्तर पर समग्र प्रयास करने होंगे।

जल प्रबंधन पर्यावरण, जैविक संसाधन एवं मानव के अस्तित्व हेतु आवश्यक है। इसके लिए IPCC ने अपनी रिपोर्टों में चिंता व्यक्त की है। यह समुद्री संसाधन, ग्लेशियर एवं भूमिगत जल के संदर्भ में देखी जा सकती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत सरकार ने जल के बेहतर प्रबंधन हेतु जल शक्ति मंत्रालय का गठन किया है। यह मंत्रालय मुख्यतया समन्वय एवं जल संरक्षण हेतु शोध को बढ़ावा देगा। स्वच्छ भारत अभियान एवं स्वच्छ गंगा मिशन भी जल के बेहतर प्रबंधन हेतु संचालित है। गंगा को निर्मल बनाने हेतु सरकार संपूर्ण बेसिन को इकाई मानकर काम कर रही है। इसमें वृक्षारोपण को भी शामिल किया है।

एकीकृत बेसिन जल प्रबंधन हेतु भी सरकार ध्यान दे रही है। इससे सरकार संपूर्ण बेसिन में जल का इष्टतम उपयोग करने पर बल दे रही है। तेलंगाना में कृष्णा एवं पेन्नार नदियों के अतिरिक्त जल का उपयोग। उद्योगों से अपशिष्ट जल का भी पुर्नचक्रण के माध्यम से उपयोग पर बल दे रही है। नगरीय अपशिष्ट जल को भी पुर्नचक्रण के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लिए विभिन्न स्थानीय निकायों को सहयोग किया जा रहा है।

नीति आयोग भी जल प्रबंधन हेतु सूचकांक एवं राज्यों के नीति निर्माण में सहयोग एवं समन्वय कर रहा है। नीति आयोग कृषि, उद्योग एवं नगरीय क्षेत्र में जल के इष्टतम उपयोग हेतु तकनीकी सहायता एवं शोध को बढ़ावा दे रहा है।

जल प्रबंधन की चुनौति से बेहतर तरीके से निपटकर ही 21वीं सदी को बेहतर बना सकते हैं। इसके लिए पारंपरिक सिंचाई पद्धति को बढ़ावा देना होगा। पूर्वोत्तर की बांस के माध्यम से ड्रिप सिंचाई, राजस्थान की जोहड़ एवं झालरा पद्धतियाँ महत्वपूर्ण हैं जिन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

हाल ही में ~~झालावा~~ बांसवाड़ा (राज.) जिले की वाटर हार्वेस्टिंग पद्धति लागत प्रभावी एवं सरल विधि है। जिसमें पुराने कुओं को उपयोग में लिया जाता है। भारत सरकार की पहल सूक्ष्म सिंचाई परियोजना के क्रियान्वयन को बेहतर बनाना होगा। इनमें व्याप्त विसंगतियों का समाधान करना होगा जैसे सब्सिडी को तार्किक बनाना एवं छोटे किसानों को ~~आ~~ किराये पर उपकरण उपलब्ध करवाना।

वहीं जल के पुर्नचक्रण, इष्टतम उपयोग एवं मितव्ययता को भी व्यवहारगत बदलावों के माध्यम से स्वीकार करना होगा। वास्तविक बदलाव समाज एवं व्यक्ति के स्तर पर ही संभव है। स्वच्छ भारत अभियान ने जन स्वीकारता को बताया भी है। राष्ट्र एवं वैश्विक लक्ष्यों की पूर्ति भी जल के बेहतर प्रबंधन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के साथ ही है।

भारत के संविधान का गरिमामय जीवन की पूर्ति एवं सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त 21वीं सदी के भारत विरुद्ध, सर्वसुलभ एवं वहनीय जल समाधान प्रदान करके ही प्रदान कर सकता है। भारत के अंतिम व्यक्ति सर्वांगीण विकास भी जल प्रबंधन की चुनौतियों के समाधान में है। इस दिशा में निरंतर प्रयास करने होंगे —

"अंधकार को क्यों धिक्कारें
अच्छा है एक दीप जलाएं।"

5W — what — क्या — आर्थिक, सांस्कृतिक एवं
why — क्यों
when → कब → पिछले
who
where
How — व्यापार (संगठनात्मक U.S., चीन)

V.S. — चीन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आधार

क्या हम कि वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहे हैं।

I ऐतिहासिक कारण
- → उपनिवेशवाद
- → 1945 के बाद
- → उभरती हुई शक्तियाँ → Cold war

II सामाजिक
- महिला
- बच्चे
- दिव्यांग
- वृद्ध परिवार — एकल

शिक्षा व स्वास्थ्य

IV समाधान
- वैश्विक लाभ तक पहुँच
- Global value chain
- श्रम, पूंजी, निवेश — FDI
- व्यापार — आयात, निर्यात

III राजनीति
- लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता
- अरब / स्प्रिंग
- वैश्विक संस्थाओं में भागीदारी

शासन — सुशासन, Quad, पारदर्शिता

चुनौती

कूटनीति
- U.S. — ईरान — भारत
- U.S. — रूस — भारत

VII आंतरिक सुरक्षा — नशे (drugs), आतंक, परमाणु

तकनीकी — इसरो — NASA का सहयोग

V आपदा प्रबंधन → कोरोना, जलवायु परिवर्तन

ethical values

तथ्य — U.S. चीन — 400b $

— भारत का व्यापार — 2% कम

— GDP का 60% trade

[विनिर्माण क्षेत्र → 17-18 → 25% ↑ export

क्यों — Subsidy — WTO का मुद्दा, सहा मुद्दा

प्रभाव

कारण

सरकारी प्रयास

सुझाव

व्यापार असंतुलन

— नव साम्राज्यवाद आर्थिक

[सैन्य अड्डों

→ वीजा नियम / संरक्षणवाद

→

नहीं किया नहीं

BRI रणनीति

वैश्विक संस्थानों — blue dot network

→ WTO में सुधार

→ सरकार श्रम सुधार

→ FDI की आउटरीच

RCEP

— चीन के →

नेतृत्व →

— भारत - U.S. - EU

— Quad

— 45 प्रथम, act east

— मध्य पूर्व

सुझाव :

→ WTO में सुधार करो — वैश्विक स्तर पर गरीब देशों का भी ध्यान रखो

→ UN में भी सुधार

→ प्रतिनिधित्व सापेक्ष नहीं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

~~वैश्वीकरण एक व्यापक संकल्पना है जिसमें आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, आ राजनैतिक आर्थिक एवं निवेश का वैश्विक स्तर पर आदान - प्रदान होता है। वैश्वीकरण राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।~~

21वीं सदी के भारत में जल प्रबंधन की चुनौती

7500/

5W — What → जल प्रबंधन की उपलब्धता — 1500 घन मी/p — 2030 - 1100/

Where — कृषि, उद्योग, ग्रामीण - सिंचाई, नगर - पेयजल

बाढ़ ←

सूखा ←

Why — mismanagement

When — नगरों से निकले हुए जल का बेहतर उपयोग

Who — राष्ट्र, व्यक्ति, समाज

How — जलशक्ति भारत — पेयजल कृषि के आतिरिक्त

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ऐतिहासिक

II समाज
- महिला - सर्वाधिक प्रभावित
- बच्चे - स्वच्छ पेयजल - डायरिया
- दिव्यांग — स्वच्छ भारत अभियान
- शिक्षा व स्वास्थ्य

I आर्थिक संसाधन
- पन बिजली परियोजना
- हिमालय Glacier
- समुद्री संसाधन
- उद्योगों के विकास हेतु
- कृषि
- ऊर्जा

भूगोल को प्रभावित करता है → मैदान

राजनीति — किसान - सिंचाई - संसाधन → 60% भौमजल
↓ राजनीति प्रभावित करती है

नदी विवाद → कावेरी

III कूटनीति
- हिमालय में dam बनाना
- नदी समझौता — पाक, बांग्ला

शासन → आंदोलन

IV आपदा प्रबंधन - कोरोना में जल की मांग - स्वच्छता हेतु
- बाढ़

आंतरिक सुरक्षा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

18

61

जल प्रबंधन की चुनौती

2.5 2

कैसे | **कारण** | **सरकारी प्रयास** | **सुझाव**

कैसे
- महिला / सामाजिक कारण
- आर्थिक हित प्रभावित
- राजनीति – नदी विवाद, जलीय टांच
- विदेशों के साथ संबंध
- आंतरिक सुरक्षा
- आपदा

कारण
- जल का दुरुपयोग
- कृषि के माध्यम से जल का निर्यात
- नगरीय अपशिष्ट का पुनर्चक्रण
- नदीय जल प्रदूषण
- जल संरक्षण का बेहतर तरीका

सरकारी प्रयास
- → जल संरक्षण / सूक्ष्म जल सिंचाई परियोजना
- → स्वच्छ गंगा / निर्मल गंगा
- → स्वच्छ भारत, नदियों का साफ करना
- → जल शक्ति मंत्रालय
- → अंतर्राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम
- → एकीकृत जल बेसिन प्रबंधन
- → उद्योगों का जल का पुनर्चक्रण

सुझाव
- पारंपरिक सिंचाई जल संरक्षण – बांस सिंचाई
- बांसवाड़ा model – वाटर हार्वेस्टिंग
- सूक्ष्म सिंचाई
- व्यवहारगत बदलाव
- नागरिक के रूप में काम करना होगा

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत में 17%

रहीमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे मोती, मानुष, चून।"

भारत में 17% जनसंख्या 4% जल संसाधन है। ~~भारतीय~~ ~~अ~~

पर्यावरण संरक्षण
आर्थिक, ~~जैविक~~ विकास एवं सामाजिक